International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 1153-1155

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 1153-1155
www.allresearchjournal.com
Received: 06-07-2015
Accepted: 09-08-2015

डॉ. प्रतिभा शर्मा
इतिहास विभाग, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author
डॉ. प्रतिभा शर्मा
इतिहास विभाग, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

खाने जहाँ मकबूल ''तेलंगानी'' की राजनैतिक एवं प्रशासकीय भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. प्रतिभा शर्मा

सारांश
खाने जहाँ मकबूल मूलतः तेलंगाना प्रदेश का निवासी था। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक व सुल्तान फिरोजशाह के शासनकाल में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन था। खाने जहाँ ने दिल्ली सल्तनत के प्रशासन व अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान की। उसने सैनिक, आर्थिक, भू–राजस्व व्यवस्था, स्थापत्य, प्रशासनिक, कूटनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया। प्रस्तुत शोध पत्र खाने जहाँ मकबूल के इन सभी पक्षों पर प्रकाश डालेगा तथा साथ ही सुल्तान फिरोजशाह तुगलक के शासन का एक महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ के रूप में उसकी पहचान स्थापित करेगा।

कूटशब्दः विजारत, धर्मान्तरण, अभियान, भूराजस्व, शषगनी मुद्रा, कारकून, मुक्ती, आमिल।

प्रस्तावनाः
खाने जहाँ मकबूल मूलतः तिलंग (तेलंगाना) प्रदेश का तेलगू ब्राह्मण था। मलिक मकबूल को 'माला युगन्धरूद', गनन्मा नायक था, कुन्नू नाम से भी जाना जाता था वह काकतीय साम्राज्य में राय प्रतापरुद्र देव (1289–1323 ई0) के अधीन एक उच्च सैनिक अधिकारी था। सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक के शासनकाल में उसके पुत्र मुहम्मद बिन तुगलक ने वारंगल के विरुद्ध आक्रमण (सन् 1323 ई0) कर राय को पराजित कर उसके साम्राज्य को अपने अधीन कर दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया था। मुहम्मद बिन तुगलक को इस प्रदेश का गवर्नर बनाया गया। उसने युद्ध में पराजित राय प्रताप रूद्रदेव व उनके सैनिक अधिकारी कुन्नू को दिल्ली भेजने का आदेश दिया परन्तु रास्ते में ही राय प्रतापरूद्र देव की मृत्यु हो गयी। वहीं कुन्नू का इस्लाम में धर्मान्तरण कर 'मकबूल' नाम रख दिया गया। मुहम्मद बिन तुगलक मलिक मकबूल की सैन्य व प्रशासकीय योग्यता से भली–भाँति परिचित था। अतः उसे ''किवामुलमुल्क'' की उपाधि प्रदान कर तिलंग प्रदेश का गवर्नर बनाकर वापस दिल्ली आ गया। यह प्रदेश मुस्लिम शासन के लिए तैयार नहीं था अतः स्थान–स्थान पर हिन्दुओं ने मुस्लिम शासन के विरुद्ध विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया। मलिक मकबूल लगातार होने वाले इन प्रतिरोधों से परेशान होकर तिलंग प्रदेश छोड़कर दिल्ली आ गया और तिलंग के प्रदेश पर कपाया नायक ने आसानी से अधिकार कर लिया तेलंगाना प्रदेश पर पुनः मकबूल अधिकार नहीं कर सका। और वह सल्तनत से निकल गया। दिल्ली में इस समय मुहम्मद बिन तुगलक सुल्तान के पद पर आसीन हो चुका था। तेलंगाना में मलिक मकबूल के असफल हो जाने एवं वहाँ से भाग आने के बावजूद भी सुल्तान मुहम्मद को मकबूल की योग्यता पर भरोसा था। इसलिए उसे मुल्तान का गवर्नर बनाकर भेज दिया। जब वह मुल्तान से वापस आया तो सुल्तान मुहम्मद उसे अपने साथ गुजरात अभियान में ले गया। जहाँ वह युद्ध करके विरोधियों का दमन करने में सफल रहा। इसमें बहुत से लोग मारे गये तथा उनकी स्त्रियाँ, बच्चे तथा धन सम्पत्ति मलिक मकबूल ने एकत्रित कर दिल्ली भेज दिये। उसकी इस सफलता से प्रसन्न होकर सुल्तान मुहम्मद ने उसे ''नायब–विजारत'' का पद प्रदान किया। यद्यपि वजीर के पद पर ख्वाजा जहाँ आसीन था परन्तु मलिक मकबूल के नायब विजारत का पद प्राप्त करते ही उसकी उपस्थिति केवल नाममात्र के लिए ही रह गयी क्योंकि दीवान– ए–विजारत के सभी कार्य मलिक मकबूल द्वारा ही सम्पन्न किये जाने लगे। शाही फरमानों पर मुहर लगाने और हस्ताक्षर का अधिकार भी उसको मिल गया था। अक्ताओं के मुक्तियों का हिसाब–किताब की जाँच भी अत्यधिक कठोरतापूर्वक ढंग से उसी के द्वारा कराई जाती थी। ख्वाजा जहाँ की अपेक्षा मुक्ति मलिक मकबूल से ही भय खाती थी।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्योपरान्त वजीर ख्वाजा जहाँ ने एक अवयस्क बालक को दिल्ली की गद्दी पर सिहासनारोहण कर दिया जबकि फिरोजशाह तुगलक का 23 मार्च 1351 ई0 को थट्टा के निकट राज्याभिषेक हो गया। मलिक मकबूल ने इसी समय सुल्तान फिरोज को पत्र लिखकर उसकी अधिनता स्वीकार कर ली। ख्वाजा जहाँ के विरोध के बावजूद वह सुल्तान फिरोज से मिलने एकदार नामक स्थान पर पहुँचा। सुल्तान फिरोज ने उससे प्रसन्न होकर उसे खिलअत प्रदान की।

सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने जब दिल्ली में प्रवेश किया तब मलिक मकबूल उसके समर्थन में वहाँ उसक साथ रहा। सुल्तान फिरोज ने सर्वप्रथम प्रशासकीय व्यवस्था को ठीक करने का प्रयास किया। उसके सामने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा दौलताबाद से वापस आने पर दिल्ली प्रदेश को आबाद करने के लिए दिल्ली के निवासियों को प्रदान किये गये ऋण के सन्दर्भ में समस्या था कि अब उसको किस प्रकार से वापिस लिया जाये। सुल्तान ने मलिक मकबूल से इस विषय में परामर्श किया तब उसने सुल्तान फिरोज को सलाह दी कि वह धन सुल्तान ने विशेष परस्थितियों में दिया था। अतः उसे क्षमा कर देना चाहिए। सुल्तान ने मलिक मकबूल के परामर्शानुसार वह ऋण माफ कर दिया। सुल्तान उसके बुद्धि चातुर्य एवं कुशलता से अत्यधिक प्रभावित हुआ और उसे सनद एवं छत्र प्रदान कर दिल्ली राज्य का 'वजीर' नियुक्त किया एवं उसे ''मसनद–ए–आली कुतलग आजम–ए–हुमायूँ खाने जहाँ मकबूल'' की उपाधि प्रदान कर 'दीवान– ए–विजारत' के समस्त अधिकार प्रदान कर दिये।

सुल्तान फिरोज, खाने–जहाँ की सलाह के बिना कोई कार्य नहीं करता था। खाने जहाँ व उसके परिवार को साम्राज्य में अत्यधिक ऐश्वर्य प्राप्त था। सुल्तान का आदेश था कि खाने जहाँ के जिस पुत्र का भी जन्म हो उसे 11000 टंका एवं जिस पुत्री का विवाह हो उसके दामाद को 15000 टंके की वृत्ति निश्चित की जाये। साम्राज्य में उसके महत्वपूर्ण भूमिका में होने के कारण ही स्वयं सुल्तान फिरोज का मानना था कि ''दिल्ली का बादशाह तो खाने जहाँ है''।

खाने जहाँ मकबूल ने वजीर के पद पर नियुक्त होने के पश्चात् राजकोश को सम्पन्न करने पर विशेष ध्यान दिया। उसका मानना था कि ''राज्य तथा शासन का आधार धन है, यदि खजाने में धन की कमी हो जाये अथवा किसी अन्य स्थान पर नष्ट हो जाये तो राज्य की नींव में दोष आ जाता है। यदि ईश्वर न करे, शासकों का खजाना किसी कारण रिक्त हो जाय तो उस राज्य का स्थिर रहना तथा सुल्तान का आराम बड़ा ही कठिन हो जाता है।'' सुल्तान फिरोज के राज्य की आर्थिक व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए ही भू–राजस्व व्यवस्था का पुनर्गठन किया एवं राज्य की कुल आय जानने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कराया। साथ ही कारकूनों, आमिलों व मुक्तियों द्वारा किये जाने वाले धन सम्बन्धी भ्रष्टाचार या हेरा–फेरी पर भी नियंत्रण रखने का प्रयास किया। उसके संदर्भ में ऐसा एक विवरण शम्से सिराज अफीफ अपनी पुस्तक 'तारीख–ए–फिरोजशाही' में करते हैं कि एक बार सुल्तान को एक जूता भेंट किया गया जिसका मूल्य 80,000 टंका था। परन्तु कारकूनों ने उसे लखनौती के उपहारों में दिखाकर आपस में बांट लिया। कुछ समय उपरान्त जब सुल्तान ने वह जूता मांगा तो उन्होंने कहा कि वह तो लखनौती के उपहारों में भेज दिया। सुल्तान को संशय हुआ कि जूता है नहीं अतः वह उन्हें दण्ड देना चाहता था परन्तु खाने जहाँ ने कारकूनों से कहा कि जूते का मूल्य 80 हजार टंका खजाने में पहुँचा दो। जब सुल्तान ने पूछा कि उन कारकूनों का क्या हुआ तो खाने जहाँ ने कहा कि जूते का मूल्य खजाने में पहुँच गया है। अब जूता लखनौती गया है अथवा नहीं।

खाने जहाँ ने सुल्तान फिरोजशाह के प्रशासन में व्याप्त अनेक अव्यवस्थाओं को भी दूर करने का प्रयास किया जिससे सुल्तान का शासन स्थायित्व को प्राप्त करे। उसने राज्य में व्याप्त बेरोजगारी को दूर करने का प्रयास किया। उसने लोगों की योग्यता के अनुसार कारखानों में काम दिलवाया। उसने मुद्रा सम्बन्धी सुधार भी किए। शषगनी मुद्रा की कमी को बड़ी विद्वतापूर्ण ढंग से दूर कर दिया। सुल्तान को गुप्तचर से सूचना मिली की शाही अधिकारी शषगनी मुद्रा में से एक दाना चांदी कम कर लेते है। सुल्तान ने इसकी जाँच गुप्त रूप से खाने जहाँ को सौंप दी। इस पर खाने जहाँ ने सुल्तान से कहा है कि ''सुल्तानों की मुद्रा धरती पर कुमारी कन्या के समान होती है। यदि कुमारी कन्या का सच या झूठ कहीं कुख्यात हो जाता है या उस पर दोष लग जाता है तो वह अत्यधिक रूपवती व योग्य होने पर भी पूछी नहीं जायेगी। खाने जहाँ से ऐसे ही मुद्रा भी कुख्यात हो जायेगी। तब सुल्तान फिरोजने इसकी जाँच के लिए क्या उपाय करने चाहिए सच जाना जा सके। खाने जहाँ का मानना था कि इसकी जाँच करना एक बड़ी भूल होगी। परन्तु सुल्तान को संतुष्ट करने के लिए उसने गुप्त रूप से टकसाल के प्रबंधक कजरशाह को बुलवाकर मुद्रा की प्रमाणिकता जाँचने के लिए एक योजना बनाई जिससे परीक्षण के समय शषगनी अपनी माप के अनुसार सही निकली। इससे खाने जहाँ ने मुद्रा की विश्वसनीयता को बनाये रखा। कुछ समयोपरान्त खान जहाँ ने किसी अन्य बहाने से कजरशाह को पदच्युत करा दिया। यह खाने जहाँ द्वारा राज्य हित में किया गया महत्वपूर्ण कार्य था।

सुल्तान फिरोजशाह खाने जहाँ की सलाह के बिना कोई कार्य नहीं करता था। इसके अतिरिक्त जब वह किसी युद्ध अथवा शिकार के लिए प्रस्थान करता तो खाने जहाँ को अपना दिल्ली में प्रतिनिधि बनाकर छोड़कर जाता था। सुल्तान फिरोज ने प्रथम बार बंगाल पर आक्रमण के लिए सन् 1353 ई0 में दिल्ली से प्रस्थान किया। सुल्तान की अनुपस्थिति में दिल्ली के प्रशासन का कार्य खाने जहाँ ने बड़ी ही दक्षता के साथ किया। सुल्तान अपनी अनुपस्थिति में खाने जहाँ द्वारा किये गये कार्यो से बेहद संतुष्ट हुआ।

सुनारगाँव के जफर खाँ की शिकायत पर सुल्तान फिरोज को खाने जहाँ ने लखनौती पर आक्रमण करने की सलाह दी– ''सुनारगाँव पर, जो बंगाल के मध्य में है, सुल्तान शमसुद्दीन ने अधिकार जमा लिया है और वहाँ के अत्याचार से पीड़ित लोग विनती हेतु आये हैं तो इस अवस्था में आप बंगाल पर आक्रमण करके उस अत्याचारी को दण्ड दें तो संसार में प्रसिद्ध हो जायेगा कि सुल्तान फिरोजशाह ने पीड़ितों की विनती सुनी''। सुल्तान फिरोज ने उसकी सलाह मानकर सन् 1359 ई0 में लखनौती पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान करते समय खाने जहाँ को पुनः दिल्ली के प्रशासन का पूर्ण अधिकार सौंप दिया। दिल्ली लौटते समय सुल्तान जामनगर के विरुद्ध सेना लेकर बढ़ा। लगभग ढाई वर्षों की अनुपस्थिति के बाद अत्यन्त कठिनाई एवं कष्ट सहकर सुल्तान दिल्ली लौटा। इन वर्षों में दिल्ली का प्रशासन शांतिपूर्ण ढंग से खाने जहाँ चलाता रहा। खाने जहाँ सुल्तान की अनुपस्थिति में सुल्तान के प्रतिनिधि के रूप में अत्यधिक सेना, हाथी, पैदल सैनिक, समस्त पुत्र, नाती, दामाद, दास तथा दरियाई घोड़े पर सवार होकर सफेद पेटी एवं बहुमूल्य टोपी पहनकर अस्त्र–शस्त्र लिए दिल्ली में घूमा करता था। उसके भय के कारण समस्त प्रजा संतुष्ट रहती थी एवं किसी प्रकार के उसके विरोध या असंतोष की आशंका नहीं थी। सुल्तान फिरोज इस बात से पूरी तरह से आश्वस्त था कि दिल्ली का प्रशासन उसकी अनुपस्थिति में खाने जहाँ कुशलतापूर्वक संचालित करता है। अतः उसने सुल्तान मुहम्मद के समय से अधूरे सिंध अभियान को पूर्ण करने का निश्चय किया। सुल्तान पुनः खाने जहाँ पर दिल्ली का प्रशासन छोड़कर दिल्ली से थट्टा के लिए निकल गया। वहाँ से लौटते समय सुल्तान कच्छ के मैदान में 6 महीने तक रास्ता भटक गया। ऐसी परिस्थिति में जबकि सुल्तान का कोई समाचार दिल्ली नहीं पहुँच रहा था और धीरे–धीरे सम्पूर्ण दिल्ली में यह फैल गया कि सुल्तान फिरोज सेना सहित गायब हो गया है। ऐसी विषम

परिस्थिति में खाने जहाँ ने राज्य में शांति बनाये रखने का प्रयास किया परन्तु जब उसने देखा कि अशांति बढ़ती जा रही है तो उसने सुल्तान की ओर से झूठा फरमान बनाकर जिसमें सुल्तान तथा सेना की कुशलता का उल्लेख था। दिल्ली की जनता के समक्ष पढ़ दिया, परिणामस्वरूप जनता संतुष्ट हो गयी। यह खाने जहाँ का सुल्तान के प्रति वफादारी एवं सम्मान का महत्वपूर्ण उदाहरण है कि इतनी विपरीत परिस्थितियों में भी उसने राज्य के अपहरण का विचार नहीं किया और अपनी बुद्धिमता से जनता के असंतोष को भी समाप्त कर दिया।

सुल्तान फिरोज ने थट्टा पर पुनः आक्रमण करने के लिए युद्ध सामग्री एवं हथियार मंगाने के लिए जब खाने जहाँ के पास फरमान भेजा तो उसने प्रत्येक कारखाने सामग्री तैयार करने का आदेश दिया और अत्यन्त शीघ्रता के साथ सभी सामान तैयार हो गया। दूसरी ओर राज्य की बदायूँ, कन्नौज, सन्दीला, अवध, जौनपुर, बिहार, तिरहुट, महोवा, ईरज, चन्देरी, धार, दोआब, समाना, दीपालपुर, मुल्तान आदि अक्ताओं से भी सेनाएँ एवं घोड़े एकत्र कर लिये जिसे खाने जहाँ ने सुल्तान के पास भिजवा दिया जिससे सुल्तान को थट्टा पर आक्रमण करने में सहायता प्राप्त हुई। जब ये सभी सेना एवं सामग्री सुल्तान के पास पहुँची तो उसने वजीर खाने जहाँ की अत्यधिक प्रशंसा की । जब सुल्तान फिरोज के इन युद्धों में सफलता प्राप्त नहीं हो रही थी ऐसी परिस्थिति में खाने जहाँ ने सुल्तान को आगे युद्ध न करने की सलाह दी। सुल्तान को खाने जहाँ की बात पसंद आई और उसन कहा कि अब मैं मुसलमानों पर कदापि आक्रमण नहीं करूँगा और अपना विशेष वस्त्र जो कि ऊपर पहना हुआ था उसे खाने जहाँ को पहनाकर सम्मानित किया।

सुल्तान फिरोज अपने राज्यारोहण के प्रथम सात वर्षों में केवल 13 दिन ही दिल्ली में रहा। परन्तु खाने जहाँ ने समस्त राज्य को विधिवत संभाला। खाने जहाँ आवश्यकतानुरुप अपने सैन्य योग्यता को प्रदर्शित किया। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के साथ गुजरात विद्रोह में अपनी सैन्य कुशलता का परिचय दिया और विद्रोहियों को पराजित किया। खाने जहाँ ने राज्य की आर्थिक व्यवस्था में सुधारकर राजकोष में वृद्धि करने पर ध्यान केन्द्रित किया। उसने राज्य के शत्रुओं का विनाश किया जिस कारण उसके समय कोई भी बड़ी विद्रोह नहीं हो सका। खाने जहाँ की राज्य के प्रति निष्ठा, प्रशासकीय योग्यता व राजनैतिक दक्षता का उदाहरण है कि ऐनमुलमुल्क जैसा विरोधी भी उसकी प्रशंसा करता है। खाने जहाँ द्वारा ऐनमुलमुल्क को 'मुशरिफे ममालिक' के पद से हटा दिया गया और जब यह सूचना अन्य अमीरों तक पहुँची तो उनमें आशंका पैदा हो गयी कि आज ऐनमुलमुल्क को हटना पड़ा है कल किसी अन्य को। अमीरों ने सुल्तान से खाने जहाँ की शिकायत की। अतः सुल्तान फिरोजशाह ने ऐनमुलमुल्क से ही विचार किया कि क्या करना चाहिए। तब ऐनमुलमुल्क ने कहा कि ''खाने जहाँ बड़ा ही बुद्धिमान व योग्य वजीर है उसके हटाने से ना जाने क्या हो जायेगा। राज्य अपने स्थान पर रहे या राज्य का जहाज हिलने लगे'' अतः सुल्तान ने खाने जहाँ पर अपना विश्वास बनाये रखा।

खाने जहाँ को सभी प्रकार की ललित कलाओं में भी रुचि था। सुल्तान फिरोजशाह द्वारा बनवायी गयी इमारतों की योजना पर उसका प्रभाव रहता था। इसके अतिरिक्त जहाँ कहीं भी इमारत प्रारम्भ होने वाली होती थी तो दीवान–ए–विजारत के द्वारा उसमें प्रयुक्त होने वाली सामग्री, लागत, मजदूरी आदि सभी का लेखा–जोखा तैयार किया जाता था। अतः उसके सहयोग व निर्माण योजना से सुल्तान फिरोज के शासनकाल में निर्माण कार्य बहुत अधिक हुआ। खाने जहाँ की मृत्यु लगभग 80 वर्ष की आयु में 1368–69 ई0 में हुईं। उसके निधन का शोक समस्त राज्यवासियों को हुआ। वह प्रत्येक क्षण प्रजा व राज्य का ही भला चाहता था। किसी पर भी अकारण अत्याचार नहीं होने देता था। उसकी मृत्युपरान्त जनता अपने आप को असहाय समझने लगी। उसके इन्हीं गुणों के कारण उसे शेख निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के पास दफनाया गया। बाद में उसके पुत्र खाने जहाँ जौनाशाह ने वहाँ मकबरा बनवाया जोकि स्थापत्य कला में अपना अद्वितीय स्थान रखता है।

संदर्भ

1. अमीर खुसरो–तुगलकनामा, अनु0 रिजवी, अलीगढ़ 1957।
2. जियाउद्दीन बरनी–तारीख–ए–फिरोजशाही, अनु0 मु0 हबीब, अलीगढ़ 2005।
3. शम्से सिराज अफीफ– तारीखी फिरोजशाद, अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, तुगलक कालीन भारत, अलीगढ़, 1957
4. फुतुहात–ए–फिरोजशादी–फिरोजशाह तुगलक, अनु0 अजरा अल्वी शेख अब्दुररशीद, दिल्ली – 1996।
5. इसामी–फुतुह–उस–सलातीन, सं0 आगा मेंहदी हुसैन आगरा, 1938।
6. इब्नबतूता–रेहला, अनु0 मेहदी हसन, बड़ौदा, 1953।
7. याहिया बिन अहमद, तारीखी–मुबारकशाही, अनु0 के0के0 बसु, बड़ौदा 1932
8. सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, तुगलक कालीन भारत भाग–1, अलीगढ़ 1957।
9. सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, तुगलक कालीन भारत भाग–2, अलीगढ़ 1957।
10. Elliot HM, Dowson J. History of India as Told by its own Historian London, 3(4):1866-77
11. Husain Mahdi, Tughlaq Dynasty. Culcutta, 1933.
12. Prasad Ishwari. A Hsitory of Qaraunah Turks in India, Allahabad, 1936.
13. Husain Mahdi. The Rise and Fall of Muhammad bin Tughluq, London, 1938.
14. Majumdar RC. The History of Culture of the Indian People, the Delhi Sultante, Bombay, 1966, 4.
15. Johri RC, Firoz Tughluq. Agra, 1968.
16. Habib M Nizami. A Comprehensive History of India-The Delhi Sultanat Delhi, 1970, 5.
17. Qureshi IH. Administration of the Sultanate of Delhi, New Delhi, 1971.
18. Mehta JL. Advanced Stduy in the History of Medieval India, New Delhi, 1980, 1.
19. Banerji Jamini Mohans Prasad Banarsi. History of Firuz Shah Tughluq, Delhi, 1987.
20. Karnad, Girish, Tughluq. Oxford New Delhi, 1997.
21. Sayed MH. History of the Delhi Sultanat, New Delhi, 2004, 2.
22. Kumar Sunil. The Emergence of the Delhi Sultanate, New Delhi, 2010.
23. Gajrani Shiv, Rams. History and Culture of Sultanate Period- Delhi, 2013.